

संनं हं तु हा हा त न मां ॥ संसारया ॥ ६ ॥ ततो वेहे जि हा जल
ही न न न न मां सक मे नं हा ले द्या का धन जल वि वर्मा ॥
संसारया ॥ १ ॥ अथ म म मि या हा गुली मि हू सनी
मि हू या सा म मि या सा थ म्नी या को गु र्मा थ
या र्मा र्मा मि हू गु डि वि वर्मा ॥ संसारया ॥ २ ॥
गु र्मा र्मा वनी मा थ गु लि या
मि र्मा र्मा ॥ ती दु र्मा र्मा क र्मा जी जल

मनी मय मयुर राजीत सरध चन्दु स प्राणी
विन्दु वासि नि सिंघ वाहि नि वै ध वि वि ध
वि ना सि नीः जय ॥१॥ माई वि हि ति हर धर आ व
मं जन जग वति अ व ताली नी ॥ ता ता थै आ थै आ
ता थै आ दि गी दि गी थै आ ना चै तो झई वी ना सी नी

जय ॥२॥ माई नर नाराय न सु र्ब द्र वी क्र म प्र भु
को जय जय काली नीः नुवन जननी अ मृत रु पी
निर री त त्त पुर सुन्दरी जय ॥३॥ ॥ राग व्या हा ग ॥
राधा वं सिले गर मे कै म जि ह रा नु लो मा ॥ फ ॥
रत की दं पि है जा वं सी दे षी रह ना अ व गी

॥ सुष नीधीया वसिल गई राधा हो ॥१॥ तुमुजा
वे पेइ आये भाइ मजाये मै जा हो जा हा गै लो ने तन
क मर ही कार न गै जा हो ॥२॥ वास की वसुरीया
राधे तुमरी वरै जा हो सुन की वसुरीया राधे मु
ति जल क तली या हो ॥३॥

ॐ रागनिर्गुन ॥ ^{सो}पर्म त्मां प्रेमः दीत लगी पुमा ॥ क
काधन का घर कायेरी वार का हृदनिया स्व
प्रेमः दीत ॥ का वजारा का दरवार बोया स्व वन
किलाजः दिल ॥ कामाया काम मता त्याग स
रिर कि नारा दिल ॥ ज मया नद कहे सुन साधु

वे सुरत्कि धाल दील ॥ ॥ राग निर्गु ॥ नाम के
ॐ मंजम का दन्द च्छ ता ॥ ना बिल जिन नान हिना
ॐ म ॥ ॥ का ती सह सुज न्म हरी ध्या य मा नू स ज न्म
सु धा नः नागी ॥ न्दु घ द द पि छा त्रि नाम म धू न व
स वा ॥ नाम ॥ १ ॥ हा वं ह ग ती कू चू न हि जा नं म न

गति म ती म ना य ही कू ग म् पा प कि या ह् न व न स
नी ग त त नी नाम ॥ २ ॥ यहि ज म ना ज नं हा सि न च्छ
हं न व क त दा ग ध नी व ह न च्छ ना थ या ना थ स
ध नं ज न्म पु न द न स न या य नाम ॥ ३ ॥ व ती न ही
दान की या नी ज क न स वा ती क न म ह मा ना न स

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नाममध्वनसखायसंगतकनमदमाया.नामा
॥५॥ वंदयानकचूनही जान. नवनवीतनः
तमात्रः लषत आ नाऊन स्त्री दवी नगूवननही
विसात्रः नाम॥३॥ ॥रागनिर्गुन॥ आसखजह
माजरहे जिरामय्यारे रघुवर. वेल कि ववनरोवे

मानकोम त्या धामपलु जयती नारीरे ॥५॥ आउ
केवल ना अजु धारही या जोर न उई थि आई. अ व
के सेरद मेरा मात को सत्या. दसरथ वचनानिहा
रिरे ॥१॥ तद्वर मा मम नृग्न ननु धावे कवनल रे
आरि आ श्री नरथ सजु पनरा जतिल क नय राय

रहे मन दन का सिरे रगु वरे ॥२॥ करम के मचो वा
तन जानु य हिले वा भरता सीः तुलसी ॥ दास प्रभुः
आमचरन कोः हरिचरन वली हा सी रे रगु ॥३॥

रग ॥ चातु ॥ ५ ॥ हा गि गयो पिरति कोता ली ले मीः राम
रमी गये ॥ ५ ॥ गोरि गोरि मुख ते लाः पातु रिक्त व हिलो
हितु म अमृत मधु रसः राम ला गी उगये ॥ २ ॥ मुख
भरि पा नर ते ला नै ना भरि गा ज लाः सिर भरि सी
धर गा याः राम ला गा बा यो पिरति कोता रे रे मी ॥ ३ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ कारं विंदु संयुक्तं ४
 नित्यं ध्यायति योगी नः कामदं मोक्षदं
 शैव ॐ काराय नमो नमः ॥ १॥ नमंति
 रिख्यो देवा नमंति श्चाप्यहो गणान् न
 रान् नमंति देवेशं न काराय नमो नमः ॥ २॥
 महादेवं माहात्मानं महाध्यानं पण्डितं
 महापापहरं देवं सकाराय नमो नमः ॥ ३॥

शिवं सातं जगन्नाथं लोकानां हिटकारकं
 शिवमेकपरं ब्रह्म शिवाय नमो नमः
 ॥ ४॥ वाहनं वरुणं भोग्यं वासुकीकं
 ठभूरवराणं वामेशक्तिं चरं देवं वका
 राय नमो नमः ॥ ५॥ यत्र तत्र स्थितं देवं ज
 गद्धापि नमो श्वरं योगुत्सु सर्वदेवानां
 यकाराय नमो नमः ६॥ वक्ष्ये स्तोत्रं यः पठेति

ॐ शिवलोकाय नमः ७॥ ८॥
 इति श्रीमत्संकराचार्यविर
 चितं श्रीसदाशिवसंपु
 रणसंस्कृतं

रग॥ निर्जिना॥ वरसत यहि लोक लीं रे मयरा प्राप्ताः भगत कि
दुख रुलाई॥ रुरी नां कस सत ने वदत दिय दुख वं म कामे
वा धरगाई॥ श्रीरामजी को नाम यू कारे मारत कुरु किस रु
रेः मय प्रम भर्ज कि दुख रुलाई॥ १॥ ग्राहने ज व म जः
कीय करे श्रीरघू नाथ यू कारे॥ ने दरगा वै गरु धस वा

रे ग्राह को गज अ वा रे मे ला प्राप्ता भग गत कि दुख रु रा
ई॥ २॥ सरपति रावणः राम जी ने मारे नी की धेन रा जा व धाः
ई॥ मथुरा पाले कस को मारे मारव कुरु हिर्स हारे मे लाः
यु भ भग गत की दुख रु राये॥ ३॥ भा॥ मिश्र मा गे त व हि
के द्वारे वा वन रिय भव ला रे॥ राम दास यति न की कर को

रग॥ निर्जिना॥ वरसत यहि लोक लीं रे मर प्राप्तिः भगत कि
दुख रुलाई॥ रुरी नां कस सत ने वदुत दिय दुख संम वामे
वा धरगाई॥ श्रीरामजी को नाम यू कारे मारत कुरु किस रु
रेः मर प्रम भर्ज कि दुख रुलाई॥ १॥ ग्राहने ज व गजः
कोय करे श्रीरघू नाथ यू कारे॥ ने दरगा वै गरु धस वा

रे ग्राह को गज उ वारे मे ला प्राप्ति भग गत कि दुख रु
ई॥ २॥ सर यति रावणः राम जी ने मारे नीवी धेन रा जा वधाः
ई॥ मथुरा पाल के ल को मारे मारव कुरु हिस हारे मे लाः
यु भ भग गत की दुख रुलाई॥ ३॥ भा॥ मिश्र मा गे त वशि
के द्वारे बावन रिय अव लारे॥ राम दास यति न की कर को

॥ कृपाकरोकृष्णप्रदारे मे लाघुभ्रमगतकीदुखरुहाई ॥

॥ ५॥ ॥ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमो ॥ श्रीस्वरस्वती

नमो ॥ ॥ ज्वाले माले वयाजीपुं ॥ आषमसध्वी

सीलसेनेमनमदु ॥ ठथीजीपुंदा ॥ नुगतसंज्ञा

नमदु ॥ ठथीजीपुंदा ॥ दलपोल

१ॐ नमः श्रीगणेशाय नमो ॥ अर्जुनोवाच

केनपापेभवेत् अश्वाकेनपापेदरिद्रताः केनः

पापेभवेत्कुषिः कथं कस्यजनार्दनः अस्थार्थ

अर्जुनले श्रीकृष्ण उवाच ॥ देवक्यपुर्वजन्म

कापापपुन्यकाकुरामसुदृश्यमनि विवितगत्या

क्या को पाप ले अश्वा भयो. क्या को पाप ले दरिद्र भयो
क्या को पाप ले. हिन कुष्ठि सरिर भयो भनि अर्जुः
न ले श्री कृष्ण दे उ स्वध्याः १ ॥ श्री भगवानो वाच
: पल द्वारे भवेत् श्री धा. पर दुर्वै बभूव दरिद्रता
वृद्ध हत्या भवेत् कुष्ठि सुन हो पांचु नंदनैः
अस्यार्थ श्री कृष्ण ले आ ग्या ग ग्या. हे पांचु राजा

को छोरा मै ले कहं दु सुन. पूर्व जन्ममा. अड
का को स्वास्ति सि त पे ला को पाप ले. अश्वा भयो
अड का को धन वो न्या को पाप ले दरिद्र भयोः
पूर्व जन्ममा. वृद्ध हत्या ग ग्या को पाप ले कुष्ठि भ
यो. भनि श्री कृष्ण ले अर्जुन लाई सु ना घार
अर्जुनो वाच केन पुन्या ल भते हे म. केन पुन्या

जवाजितं केन पुन्यलभते राज्ञी. कथं कस्य ज
नार्दनं. अस्मार्थः क्वा को को पुन्यले. सुनादि अ
नेकद्वयपायोः क्वा को पुन्यले हादि घो रापायो
मंसि इत्यादि प सुपायोः क्वा पुन्यले ग्राम नायक
धुलो उ मरा उ भयो. धुरो राजा भयो भनि अर्जु

है श्री कृष्ण के उ सध्या ३ श्री कृष्ण उ वाच
हे मदाने भवेत् हे म. भुमि दान गवाजिते अ
त्र दाने लभते राज्ञे सुन हो पां दु नन्दः अस्मार्थ
को हि मनुष्य ले पुर्वे जन्म मा. सुवर्न दान गवा
को पुन्यले सुन इत्यादि रत्न विजव सुपायो अ

नदान ग ग्या को पुन्य ले ग्राम को नायक मै. हा
ति घो रा पायो. अनदान ग ग्या को पुन्य ले राज
पायो भनि. श्री कृष्ण ले अर्जुन लाई सुनाया ह
अर्जुनो वाच. केन पापे स्त्री मृत्यु. केन पापे पुत्र
नासन. का को पाप ले आ फ्रा स्त्रि मृत्यु भयो.
कन पापे भवत कुल कथं क सः योः जनार्दनः फेरि अर्जुन वि

ति गुरु नरे श्री कृष्ण नारायण हरिः

का को पाप ले दुषि भयो भनि. अर्जुन ले श्री कृ
ष्ण देउ संध्या. ५ श्री भगवानो वाचः. जिन पा
पे स्त्रि मृत्यु. स्या त पापे पुत्र नासन. मन भगे
भवे हिन. सुन हो पा दु न च न. अर्थ पूर्व ज
न्म मा अउ का कोरिन. नति या को पाप ले आ

प्राप्तिमृत्यु भयो. सो क संताप भयो. कुता मा
ल्या को पाप ले पुत्र नाश भयो. अंन वी त्या को
पाप ले भिक्षु के भयो भनि. श्री कृष्ण से अर्जु
न लाई सुनाया: ६ अर्जुन वाच केन पुन्य वि
चित्रस्य. केन पुन्यं सुपात्रकं. केन पुरन्य माहा

भागिकथं कस्य जनार्दनो ~~अर्जुनस्य~~
क्या पुन्य ले विचित्र रूप भयो. क्या पुन्य ले सुपा
त्र भयो. क्या पुन्य ले सुषि भोगि भयो भनि
अर्जुन ले. श्री कृष्ण डेउ स्वध्या ॥ ७ ॥
श्री कृष्ण उवाच: मित्रां न दाने विचित्रस्य गो

प्रतिविम्बिग
ग्राहे श्रीकृ
ष्ण नाराय
न हरि

न्य
दानं च सुपात्रकैः सज्जा दानं सदा भोगिः सु
न हो पातु न दत्तः अस्यार्थः समस्त दानं
गत्या को पुन्य ल्यविचित्र रूप भयोः गौ दानग
त्या को पुन्य ले सुपात्र भयोः सज्जी पात दानग
त्या को पुन्य ले सदा सुखि भयोः भनिः श्री कृष्ण

ले अर्जुन लाई सुनाया ८ अर्जुनो वाचः के
न पापे नरकं यातिः के न पापे पुत्रकं के न
पापे सदा रोगिः कथं कस्य जनार्दनः अस्या
र्थः हे श्री कृष्णः कस्य पाप ले नरक वास हो
ला कस्य पाप ले पुत्र न भै अ पुत्र भयोः कस्य पाप

लेपुत्र न भै अपुत्र भयो कथा पापले स दारे
गि भयो भनि. श्री ह्म दस उ अर्जुन ले स्वध्या. २
श्री भगवानो वाच. कं न्या दाने न ग द्द ति. ३.
ह्र दोषे अपुत्र क. देव नि द्या भ वे र र गि सु
न हो पा दु ने न नः अ स्या र्थ. दू पा दु रा जा का द्वा
रा. का अर्थ ले भ न्या. कं न्या विधि सि त दान

गर्भ स क्था. नर क वा स वा हि दैन. ब्रा ह्म ण लाई
दो हो ग न्या को पा प ले. पुत्र न भै अपुत्र भयो. दे
व नि द्यु ग न्या को पा प ले स दारे गि भयो. भनि श्री
कृष्ण ले पा दु लाई सु नाया १० अर्जुनो वाचः
के न पा पे भ वे वा द्द. के न पा पे स्त्री न कं. के न पा पे
न जन्मु क. क थं क स्य जे नाई ने अ स्या र्थ हे.

श्रीकृष्णः पूर्वजन्ममाक्यागस्याकोपापलेवहुलाया
 नयो. क्वाकोरनले. कुकुलभयो. क्वापापलेजे
 नुकभयोभनिअजुनलेस्वध्या ११ श्रीकृष्ण
 वाव सुरापानेभवेत्तमत्रं. व्यस्यागमनस्यान
 के. असुधदानेजंमुकेसुनहोपादुनन्दनः अस्यर्थ
 हेपादुपुत्र. विनाभवले. सुरापानगत्याकापाप
 या

ले. वहुलाभयो. व्यस्यास्त्रितगमगत्याकापा
 पले. कुकुरभयो. आक्रामनअसुधगरिदानग
 त्याकापापले. जंमुकभयोभनि. श्रीकृष्णलेक
 ह्या १२ अजुनोवाव केनपुन्यलनेमेविद्या. के
 नपुन्यधनाध्यके. केनपुन्यंभवेत्तमजौ. केथकस्य
 जनार्दनः अस्यार्थ क्वापुनलेधनाध्यभयोक्वा
 हेपरमेश्वरश्रीकृष्णनारायणनहरिः क्वापुन्यगत्याकाफलले

~~सुन्य~~ ले पंछि त भयो को सुन्य ले बहु तरा ज्य पायो भ
 नि. अर्जुन ले श्री कृष्ण छेउ सो ध्या १३ श्री भगवा
 नो वाच. पुर्व जन्म भवेत् विद्या हो मज ग्य धना धी
 के. वारा न सि भवेत् मृत्यु. सुन हो पाहुने दने. अ
 र्थाथ. पुर्व जन्म ममा सा विद्या दान ग या को पुं ये
 ले पंछि त भयो हो म य दू ग या को पुं न्य ले धना ध्य
 त्र

हरि स्व आ ज्ञा गनु ह्य स

भयो. वारा न सि मा मृत्यु हु ना ले बहु तरा ज्य को रा
 जा भयो भनि. श्री कृष्ण ले क ह्या १४ अर्जुनो वा
 च. के न भा ग्ये भ वे क न. के पु पु न्य न सुष बा. के
 न पाये भ वेत् नारि क थं क स्य ज ना द न. अ र्थाथ. क्या
 पुं न्य ल्य स म ल्ल सं ग पि ति भ यो भ नि. श्री कृष्ण छेउ सो
 ध्या १५ - श्री भगवानो वाच पु ति वृ ता भ वे त स्य स
 सार अ व गा रा नं मृ. सुष स्य व मा हा ना रि सु न हो
 क्या पाप गरि क न मा नि श म र्घ हं क क्या पाप गरि क न स्वा मि म उ

स्वर श्री क ल्ल ना रा य न



Pitts 1481/5

210

पांडुनंदन॥ संयुक्तगत्याकापुंन्यलेः सर्वैलोकरोप्रीतीगरिमां
 न्य गत्याः लोकात्तारु अपराध गत्या कापापलपमुर्वर्द्ध
 अहंकारले अतलाइ नाशकापापले स्वास्तिर्हृदु भनि॥
 अर्जुन साइ सुनाउदाभया॥ हे अर्जुन हो तस अर्थ यो
 संसार मा रात जानि मानि सले पुरा नादि भा गवत सुनि
 गी तापाथ गरिपर उपकार गीरिइ स्वर को ध्यान ग
 रिरहं छर तस मानि सदेखी मेरो बह तैपि या रो छ
 इति श्री कृष्ण अर्जुन संवादे कर्मविषयक समाप्तः

न ज्ञापयामिः सैकं स ह वैद नै॥ ३॥ चतुर्थ अवः
 तारु प्रनरुषिं चरुधा लनः॥ प्र ~~कृष्ण~~ दसर नली
 यु ~~कृष्ण~~ हरती कृष्ण वैद नै॥ ४॥ यै अम अव तारु
 भः वा वनरुय धारनै॥ निनया र जीमिमा गैव रि छल
 भावनः॥ ५॥ खलु म अव तीरु प्रनः प्रसुराम रुय धाः
 रनः के वृरुप सरुसा जु न वैदं वैदं दोदनै॥ ६॥ सप्त

मभर्त्ता लघुभः श्रीरामरूप धारणः ॥ दससिंहविसभ जारः
 वनादि क्षेदनी ॥ १॥ अस्मि अर्त्ता रघुभः श्रीकृष्णरूप धा
 रणः ॥ कालो लोयः ग्वपिभला के कंसासुरक्षेदेनी ॥ २॥ न
 त्रमिभवर्त्ता लघुभः वृद्धधरूप धा रणः सर्वद्विष्टिवाः
 धरियः गयासुरक्षेदनी ॥ ३॥ दसमभवत्ता लघुः
 भः कलकीरूप धारणः अनैत कोतिसंग्रजोतिः ता

शिकासुरक्षेदनी ॥ १०॥ दसमभवत्तीर लोय य
 भः असुरसर्वनासनी ॥ ११॥ यद्यदासभज ह् नाम
 सरन ले दो गोविदे ॥ १२॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः
 सदं सारदा । दि नयेपादुकाया प्रनेगं प्रकारं नमस्काः
 ॥ आयादकोशात्र विद्याविब्रधी न नाणां जिताधिकपाः

श्री सरस्वती नं विवर्धनी ज्ञानं धिगुलि महात्मे समुद्र प्रमाने अने वै कति नम
 अ गरीश विंदु मप्रपालवाने सु सु ली दा दिते विं दि गु भगी था श्री कृष्ण
 यण म ना मुनि वास जो गी दि को या दि मा ता सती भी ड मु ति त्व य न म
 यु प्र कि र्थे दी त्वत्पा प्र भा जं पु नी स्या स पि थं कला चंद्र मा
 दी सिले स्वा न हो थें मु सु हु हे रा य प्र भा चं द्रे लं गु ली नो न वा
 ता उ ली तो दी ना मं अं थें वा ज वा नी ध कं ना म से लं
 मि र्वा हि स मा नं म दु वा न ला के

मि वा भा र नि सा र्वा वा ग वा नी ज ग ता लि नि वि त्तु स क्री भ वा
 नि दि के भ गी या स्यां थ थें तो त्र रा यु थ मं मा ल पा को द को
 पु निः रा यु ने गु गुं द थु स द्दि नं ता हा मी ति सें गु ने
 पु ष कृ ष्ण थि था प्र स मी सं ई ति श्री या ल दा दे वि त्व वं
 स मा प्रं शुं भू ॥ मु या त् = ॥ = ॥ = ॥
 १ श्री गरीश चं नमः श्री वा ग वा नि का च र न क म ले पु नी
 मी र्वा प्र ले ह र थें चं पा त्वा नं दु ल ति अ ति अ भा जु ल मां मु

सुहने जोर ये जपमारा लाहा निसाफु जोर लाहा निहंय या
हादि तुनी चतुर्दिसा राहा तीदि पा लिख विनति जा नगुन
दिनु ति मध्यरे से गुनं गति क मिपं धिन या प्रतिदि पासा
सविनति चीन जिपुंदि भगतिः जानरा का धी
भगतिः क सुत्रं या फय अतिव या स य ल राग
ति त प मा ल कि न अतिः मते दे वि सार अति मर

नि

भा मि चूति को सुज वा ओ पु थं ३ नु मि र वा न
थें अथो मारा लाहा तिः साफु जोर लाहा ति ४ श्री जने सा
य न मः दि न जि ता वी या मां अ ति भा र सा फु लि ५ वी
या जि ता सु वि द्या थ नि जि ता म दानः ५ द ल य न वि या मां
क त नां स्व क मां वि या जि ता सा फु लिः ६ नं ज नं जि दे तां जि
दे क न्य म दालाः श्री जी चा जि जि दाला क म या का जि व या म रे

क सा

मामसलस्रतिः विद्याजितामीह गतिः जिदेवानेवे लसंमामवु
वंजिदाताः पयथिमचादु पाताथय्यका जिहाताविसेव
नेजिजुयाली तुली इ जिह ररफ्रीहाउ जिदला चसाजे
उ जिहुराकेथैकः हला मुः पिपतनं चितामां हेहेला
कविपामां थवो द्यको लामां शिपमनजु लमां थ

शिधका धा लामां पासादको यामां सर स्रति जिमि
मां द्राकहा २ यादो इ या सधामा यासेदी वमां इ तिआ
सारदादे विं वत्रं लमा पूञ्जु न मु या तु श्रीगणेशाय
नमः देवि सुन्दरि नाम सर श्रतिः गुनपु न या वषा नं
पिलस अतिदु वमोति यामनाया तिः ते जसं मुदुसमानं

गानहसेदि कतोयुवजरिद्धि व नंजातसंजनिधजरिनी
 पारिसपायरडा वअलीस्वरं केवलः राजहंसः समानं
 अतिनलथद्धि नथाल जंजवाजायवदकोतिलयमानं
 नंदीमंदीपालदुवातसंः तथावगथीः सोभावतः त्वयुव
 साहिनः तियसअतिलयः लाजहंसः रामानः इतिअसा
 रदांत्वत्रसमापुत्रुमुमसंतु

११ ११
 २॥ २॥
 ३॥ ३॥
 ४१ ११
 ५॥ २॥
 ६ १ ३ ॥ १

६॥ २॥
 ७ १ ११
 ८॥ २॥
 ९॥ ३॥
 १० १ ३ ॥ १

११ ११
 २१ २३
 ३२ ११
 ४१ ११
 ५२ २३
 ६२ २३

श्री गणेशाय नमः प्रा ले याम ल वि नु क न्द ध व लं
 जो क्षी र फे न पु मं भ स्या भं गु दे ह र्द नं ज्वा ला व
 त्रि लो च नं वृ षे डा दि म ह त् ग नै सु ति मि द्वं म
 ग वे द शा खा म यं स द्ये जा त मि द्वं क लं क ल हि
 तं ह्या नो मु खं प र्श्वी मं ॥ १ ॥ गौ रं कुं कुं मं यो ज
 लं वा प्रा तं गं द ह्य लं भु वि क्षे प कं ता य क र म
 यं लं सु दु लं या यु र्वे द र्म सु ता प्र ह र्ति तं नि

मं

२

ली ल कं ल चित व मे सि चि सु रा से र्दु न म
 तं व क्त्र हं रा पो ता ॥ २ ॥ सर्व ता ग्री त दि स तं पं ग
 नि कं स स चि ते जा त नं गं मि त स मि तं
 स्या म वे द र्हि तं पी त वा सि ता कुं द कं गं
 गा त्वं ग तं ग पी ग ल ज ता वा लं द नं वृ त्री
 यं त त प र ष सु र्दु न मी तं पु वं मु वि स
 ति न ॥ ३ ॥ का ला उ उ म नां ज न दि ति नि म वा वि

वकं

१

३

तपिं गेये न वा ले दु ति को ति सह सु क्ष नं जु गरं पो
 द्मा सिता थ व नं स पं तुं ग य सें नो सु ह सु म ना भि
 का पा सा लि को लि मा ला धौ द्यो रं द्य मि त्व र स
 य व द नं भौ गं रु डे सु ख ॥ ५ ॥ वि क ल वे क त गु ण व
 नं सु तिल कं सं त वी स त्वा र मि के त स्मा त दु त रं
 थो र प ति ध्य यं जो गा भी वं दे ता मं जि ते नं सु द्ध मा
 ति सु मा ति रं शां त पं च म मि सो र से व द नं रं
 सदा मन सा ॥ २

तत्प
 न
 स
 त
 न
 स
 त
 न
 स

ध्या पिते जो म यं ॥ ५ ॥ जे द्वा टं त गु णां त रु प व
 गु नै स पु र्जि तं चालि पु नां मं गा भू ज ना गा पु र्व व
 कु लै ना गा सु ता नि ल रि ता नि त्पे भ्रा नु स ह सु कि
 र नै का रा ग्नि त दं प रं त र स ह रा कं रं प्रो ल ष हं मु र्व
 ष त व ग त्र स इ दं त्व त्रं य त्प थै शि व स नि द्यु र्व
 पा प वि नि र्मु क्ति शि व लो कं म ही य ते इ ति श्री ष
 त व क्त्वा त्व त्रं स मा प्र न मा मी स तं तं

र्व

रागमस्तुति॥ उं दु सदि सतु चि वि त्ववेद शो भव सद्यो
 जातपक्षी मुखं है ॥ कुं कुं म स नि भवेद ये ऊर्वि व वा
 मदेव उतर मुखं २ पापदहन चाम ते सकल सु
 ला सु वंदित हेः तू त के च ए नि भस्या मगाम क
 ले तपूतपु तू र्वि मुखं पु र्व व हे ॥ ३ ॥ वेद अर्थ व
 न मेघ सदि सतु चि व द न ष्ट घो र द क्षी न मुखे
 ॥ ४ ॥ सक र तं त्रे ल य मंत्र जं त्र म य मु ल ति सदा

शिव ते ज ध ते ॥ ५ ॥ नि प ज ग जो स द न स मा न स
 भा व हि ते त्वं भव त्व व हे ले ॥ ६ ॥ ~~अथ श्री गणेशाय नमः~~
 म ॥ स दं सा ल दा छि न स्प पा दु का याः त्रु नो क पु का रं न म स्का
 र ध्या या द को सा सृ स्र वि ध्या वी व क्षी न ना नं जि ता छि क पा नं
 वि व वु चि जा नं ॥ १ ॥ छि गू ली मा हा त्रि स मु दु प्र म नि अ ने
 कै के विं दे म पु पा र व नेः सु रिं द्रा छि टे वं छि के भ क्ती या त
 मु नि व्या स जो गि द को या छि मा ता ॥ २ ॥ अ ती मि ठ मु ति तु इ
 फ र कि लु थं छि त्वा ल्या पु भा ज न पु द्मी स्या स सि ध्यः क ला चं

दुमादि सीले स्वानहोर्ध्वः मिखादि स्मृत् वानलोके ॥३॥
मुखं देला यापुमा चंद्रकेलः नेपाकुंद दु लंसु र्थ्याते
ज जे लः गले मोति यामाल नवानलाकः साफु अक्षमा
रा जो सेवे नुथा लः ॥४॥ सटं हं सया ह्यसं धिपालि दितलः
तुयी वस्तु लुं याति सा अने कतिलं दको लोक याके ह्मुतु
सं कि दितलः अथं वा गवानि ध्व के नाम सिल ॥५॥ दको
किं न्द रि अप्प रा कि लुरवा सं दि थं नत्प गीता गिया
ता हता सं मृदं गा दि वा जा ध्व मि स्य नथा लं ति मिं ति

ति मिं ति ति मिं गा ति धाल ॥६॥ मुनि नारदादि फ
को से त्रा त्रया तं कृपा पुरा दि दि विलाः अने क सा खं म
फु छि वत्वा नं जि नं या य मा मं गुलि नो न वा ता उत्ती
ते छि नामं ॥७॥ सिवा भारति सारदा वा गवा नि जगता रि नि
विष्णु सक्ती मवानि दि क भक्ती या संध थे रत्ना त्रया र्
थं मं भाल पा को पुरा लि ३ ॥८॥ ने गु गंड थू सं धि नं ता
ठामि ति सं गु जे पौ ष क सति थि च्चु रत्त मि सं थ्व लिः
विपु ल क्ष्मा सु न न्द न वा ठा जि ता सि धि वि ध्या दि पा
॥ दको ३ ॥

लिसफेडा ॥ ८ ॥ इति श्रीवागवानिस्तोत्रं समाप्तं ॥

श्रीशारदाय नमः ॥ समस्तलोक यामां सरस्वतिजिनिमां चो
नाजिपुंश्चि गुप्ता वि या जि ता सु वि ध्या ॥ वि या जि ता सु
वि ध्या ध्वनं जनं जि मि तां जु लो जि पुं सु ला ता मा मं वु र्व जि
हा ता ॥ ३ ॥ जि ह्वे व ने म छा ला वि जि ध्या गा जी दा ला ॥ ध थिं दु ख
जि जु ला वि स्य व ने जि जु या ॥ ४ ॥ हे मा मं सर स्व ति छ ल पो ल
या तु ति ति तो ने य या जि ह्व ति ॥ इति श्रीशारदादेविस्तो
त्रं समाप्तं सरस्वति नमः समाप्तं नाल्पदिसंस्थिता कंठस्था

पद्मयोनिस्तु हिं हिं कारं प्रियां शुभा ॥ १ ॥ मतिर्द्वै वरदश्चैव
सर्वलोकफलपुंश्चि रं रं मंत्रं प्रिया देवि हीं हीं कृमतिना
शासनं ॥ २ ॥ शुभं कासनिरालं व मं ज्ञानं ति मि रा प्रहं सुखमो
क्षपुंश्चि मुग्धा शुभं स्व मन्त्रं प्रिया ॥ ३ ॥ पद्मोपरिष्ठांकुस
लेनिं शुक्लवर्णं मनो रमां आदि त्पर्मदुलीलिनां पुनमा
मिहरि प्रिया ॥ इति प्रशिद्धि तौ देवि वागिज्ञे न माह मनि आत्मनः
संयामासं सारदे व समा पु भां पटे व उ वा च व रं वृं ड च भट्ट ते ते

मलकुशवर्ततेवृहस्पतिरुवाच वरदा यदि मे देवि दिव्यं ज्ञानं पु यच्छ मे द
 ॥ देव इ उ वाच दत्तं ते निर्मलं ज्ञानं कुं मतिं च सकारकं रतोत्रे च ना
 न्य नरे भक्त्या मी देवास्तु वंति च सदा नरा यां ७ ते तु भंते परमं ज्ञानं
 मतुले पराक्रमं त्रिसंध्यं पुयेतो भूत्वा यो मे स्तुति पठेत्तरु
 सरस्वति सदा ध्यानं सरस्वति सदा जपंतस्य कंठे सदा वासं करिष्या
 मिनः सयः ॥ ८ ॥ इति श्री बृहस्पति चार्ये विरचितं सरस्वति स्तोत्रं
 । समाप्तं शुभम् भूयात् १ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ गुरुः ॥

गुरु धोसे छिद्या सदात्ता ध्वया शिष्य जुया छि के
 शर शा व या ॥ सुदृष्टिं स्कुने सुबुद्धि विहने छि के
 वार २ नमस्कार या ॥ १ ॥ ग्वत्मा वा गवानि वत्प्राया
 अगारि दिला छि दु यात्मा जो सापात्र माला ॥ स्वदं
 त्रं सुपशु सुविद्या सुयोगं छिर्न धा यावू सादको
 शास्त्र सिद्धि ॥ २ ॥ ॥ ददामी जाया मं वयू या नि आसा

१ श्रीगणेशाय नमः॥ त्वां श्रेयसां ठि लसा बहु तर्धं वा जुल ४ राजी
जुयि धं नास जुई ॥ वृन पिदा यायि जि व नास जुई पुत्र ना
सिद्ध सकल ह देस ता ज्व भ वि स्थिति पत्तर यां य मन संखा
सत्रु व धे जुव मान द्य ते जुव कारि कुमारि पूज यत मिल सधि
लसा स्त्री लाभ धन लाभ सत्रु नास का र्य सि धि इ स लाभ
हर्ष मान ॥ चं द्री का कु मा रि वा रा हि कु ल दे व ती यु ज य त
३ प्वा ठ स ठि ल सा द सा स क तां उ र्म त म्मी ठ क्षे स क ल ह द यि

पुर्व दी सा ज ग न यि दा धन नास जुई वं धन आ डा था स क ल
ह जुई ॥ दि विः भ ग व तिः ग र ण शः चा मु न्द्राः पु जा या त सा का र्ज सि
धिः ॥ तु ति ठि उ सा दि न मं ग ल का र्य शि धि बु ध द सा फु लः
धन उ स्र लाभ सत्रु नास जुई पुत्र रा भ द उ हे स ल क्षि म ला
भ पर दे स सं ला त सा व ड व पर या क ला त सा धन सु ह न व ड
४ ॥ कृ पा ॥ प र्व त ग ये मालः दु र्व ल मन स दु ख ता यि व ह ते सत्रु जुई
क श क ल ह जुई ध र्म या डा गु का र्य सत्रु न ना रा या इ लो गी जुई म दु गु ज ग
र न वं धन जुई जि व नास जुई ॥ सा ति ॥ सु र्ज या के म ता वि यः पि थः पु जा ज प

॥६॥ ॥नुम॥ धिउसा॥ थोयाभा मनिदसा सनिच्चरमभिठा वलनु गदार
 योइपर या आंशि जुरै मनउदास पुत्रना सजिवना सक्षे समेव यता स्व
 येमफकार्यना सजुरः पछिमटि सानं पीरे याइवः ध्वते यादे वपूजा या
 वः॥ वृह्मा यनि॥ नाथ्य स्वरिः पूजा यात्रो अत्यकार्ये सीचि जुरै वनि ते
 शुभः॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॥गुरुं गुरुवा सेधि धासदीला.
 ध्वयाशिष्य जयाधि केशर रावया॥ सुदधिं स्वहने सु
 वद्वि विहने दि के बार बार नमस्कार याइ॥१॥ गवामा वा
 निवह्या या अगारिः दिला दि द्युया ह्या जे सा पात्र मोला

न सुपशु सुविद्या सुयोगं दि नं धा या वृसादको
 क्रिदि॥२॥ ॥ददा की जामा मं ववु या निआसा मडुसु
 न तो साधि गुहपा आसा दि गुज्ञान धान द्वा यजो सुनें प
 जिधिं जात्या मूर्ख ह्या यजी दुनो प ३॥ दि व गू या द थ द्वा
 सताठा मिति सं महिना मसार दि गुवार वनू मती दु स्व
 जयाधि के सररा वया चतुर्वर्ग सिद्धि विहने मथार्न॥४॥ इति
 श्रीगणपतिस्तोत्रं समाप्तम्॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॥

आदिअ गम अंतमसिववृत्ताविष्णुसर्वमी॥ हेरामोति
थुसेतयामतु निर्वलोवमी॥ जभुकावावोराया यशोभा
निर्व जुलोमी॥ संसारयामता जु स्पेलो कर ध्या याकमी
॥१॥ ॥ मोशि मोति थुसेतया हात सिसेदिलमी॥ जरिज
वात्व युवसतिसेदिल सदं मा सुर्वराया सिंहासनेहंस
सेदिल मा॥ संसारया॥ ॥ ॥ दियालि याको सचोडा
कानेविवमी॥ गुरुसेवा दि गु सेवा या यमपूजिन

ममउ धनंमउ गथेसेवा या यमी॥ संसारया॥ ॥ ॥
उमा मनुष्यतागुण गथेलाउ मा गुरा मउ धनंमदसु
निय यायुमी॥ रूपंमउ सीपंमउ सुनीहाडातइमी॥ संसार
या॥ ॥ ॥ हेसिमदुसिंदि मउ सुनांजक ययुमी॥ भाभि
मउ जतनंमउ गथेयाहान यमी॥ उष्ट्र मउ मित्रमउ सुनी
रक्षा यायुमी॥ संसारया॥ ॥ ॥ ॥ थवक मउ मदतनामामववु
चातमी॥ नेकेलीके मपुढनाकायहोचंवातमी॥ दाजुकिजासक